REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 12 | SEPTEMBER - 2024

माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता और सोच शैली के मध्य तुलनात्मक अध्ययन''

डॉ. संदीप उपाध्याय
असिस्टेण्ट प्रोफेसर, कोणार्क एजूकेशन कॉलेज, जांजगीर–चाँपा (छ.ग.)

सारांश –

प्रस्तुत अध्ययन के लिए कुल 150 पुरूष एवं 150 महिला अध्यापकों का कोरबा जिले के शहरी क्षेत्र में संचालित सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों से चयन किया गया है। अनुसंधान कार्य के लिए केवल माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों एवं अध्यापिकाओ का चयन किया गया है। जिनकी अनुमानित आयु 21 वर्ष से 52 वर्ष के बीच में है। प्रस्तुत शोध में सोच शैली परीक्षा पत्रक : स्टर्नबर्ग और वेगनर (1991) द्वारा निर्मित एवं शिक्षण प्रभावशीलता मापनी : डॉ. श्रीमती कुलसम द्वारा निर्मित शोध उपकरणों का प्रयोग किया गया है। शोध अध्ययन का निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षण की गुणवत्ता ग्रामीण शिक्षकों के सोचशैली को प्रभावित करती है।

शब्द कुंजी – शिक्षक प्रभावशीलता, व्यावसायिक तनाव और सोच शैली।

प्रस्तावना –

आज के आधुनिक युग में आधुनिक जीवन में तनाव को अभिन्न अंग माना जाता है। यह शारीरिक प्रतिक्रिया तब होती है जब एक व्यक्ति असन्तुलन को महसुस करता है। यह मनोवैज्ञानिक है, व्यक्ति के शरीर के मांग के स्तर के बीच और उस पर बैठने की उनकी क्षमता के बीच अन्तर होने के कारण कई पर्यावरणीय तनाव पैदा हो सकता है। इसी कारण से तनाव या लोड कहा जाता है। तनावियों को तनाव के कारणों के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। किसी भी पर्यावरण स्थितियों सहित जिसमें शारीरिक या भावनात्मक जगह होती है। व्यक्ति पर मांग तनाव पर्यावरण के बीच एक गलतफहमी से पैदा होता है। इन मांगों को पूरा करने के लिये मांग और व्यक्तिगत पर्याप्त आज के जीवन को व्यस्त बनाती है।

सोच शैली व्यक्तियों की क्षमता का उपयोग करने के पसंदीदा तरीके है। ये वास्तव में अनुभूति से संबंधित है। जिसमें समझना संवेदन समस्या सुलझना, सोच और याद रखना शामिल है। हालांकि, सोचशैली संज्ञानात्मक शैलियों से अलग होती है। जो ये अधिक सामान्य है और एक के बजाय उनके कई आयाम है। क्षेत्र की स्वतंत्रता, आजादी, असभ्यता आदि/संज्ञानात्मक शैलियों का केवल एक स्तर है जबकि स्टर्नबर्ण की सोच शैली, जैसे कि कार्यों रूपों, स्तरों, गुंजाइश और शिक्षा जैसे बहु आयामों पर आधारित है। सोच शैली बौद्धिक रूप से सोच रही है। या रचनात्मक रूप से।

शिक्षा की कोई व्यवस्था, कोई पद्धति, कोई पाठ्यपुस्तक किसी देश की गुणवत्ता नहीं बढ़ सकते हैं। जब तक वो देश अपने शिक्षकों के स्तर और गुणवत्ता को न बढ़ाये। शिक्षा पर राष्ट्रीय नीति 1986 शिक्षा में

वांछनीय परिवर्तन लाने में शिक्षक और उनकी भूमिका पर जोर देती है। परस्पर सहकार को और समुदाय को उन शर्तों का निर्माण करने का प्रयास करना चाहिये जो रचनात्मक और रचनात्मक लाइनों पर शिक्षकों को प्रेरित और प्रेरणा देते है। शिक्षकों की जरूरतों और क्षमताओं और समुदाय की चिंताओं से संबंधित संचार क्रियाकलापों के उपयुक्त तरिकों को तैयार करने के लिये, नवीनता लाने की आजादी को प्राप्त करने से है।

शोध अध्यन का औचित्य :

संबंधित शोध साहित्य के पुरावलोकन अध्याय के अन्तर्गत शोधार्थी ने अपने शोध अध्ययन में चरों – शिक्षण प्रभावशीलता, तथा सोचशैली स्तर से संबंधित शोध साहित्य का सार विभिन्न श्रेणी एवं स्तर के अध्यापकों के संदर्भ में प्रस्तुत किया है। संबंधित शोध साहित्य में प्रस्तुत अध्ययनों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि इस प्रकार का कोई शोध अध्ययन नहीं किया है। अतः प्रस्तुत अध्ययन शोधार्थी का मौलिक कार्य है किसी प्रकार का प्रतिलिपिकरण नहीं है।

समस्या कथन :–

माध्यमिक विद्यालय के शिक्षको की शिक्षक प्रभावशीलता और सोच शैली के मध्य तुलनात्मक अध्ययन

तकनीकी शब्दों की परिभाषा :–

इस शोध में निम्नलिखित तीन तकनीति शब्द आये है।
(1) शिक्षण प्रभावशीलता
(2) सोच शैली

(1) शिक्षण प्रभावशीलता –

गुप्ता (1984) ''शिक्षक की वह क्षमता जो छात्रों के अनुसार छात्रों में परिवर्तन लाता है। शिक्षण प्रभावशीलता है।''

रॉयन (1969) ''एक प्रभावशाली शिक्षक छात्र में कौशलों के विकास, आवश्यकताओं, समझदारी, कार्यक्षमता, सही अभिवृत्ति, सही मूल्यों की परख तथा व्यक्तिगत समायोजन को समझ सकें।''

कोहॅन (1981) ने बताया कि छात्रों के परिणाम ही शिक्षण की प्रभावशीलता का मापक सूचंक है। जैक (1969) ने भी इस बात को निरीक्षण कर निष्कर्ष निकला। हॉसम (1960) ने भी इस बात की समीक्षा की और देखा कि अध्यापन में मूल्यांकन मापन और छात्रों के मूल्यांकन से शिक्षण प्रभावशीलता ज्ञात होती है।

(2) सोच शैली –

सोच शैली मानसिक स्वशासन है जिसमें धारणाओं का निर्माण होता है दृष्टिकोण बनता है जो दूसरों से संयोग नहीं रखता है। बल्कि बाहरी दर्पण है जो स्वयं को व्यवस्थित करता है।

स्टनबर्ग (2009) ''सोच एक निश्चित उद्‌देश्य या अंत है यह कुछ कठिनाईयां को हल करने के लिये शुरू की है, जिससे समस्या और उसका समाधान समाप्त होता है। समस्याओं के समाधान में किसी क्रियात्मक खोज का सहारा नहीं लेता। लेकिन वस्तुओं गतिविधियों और अनुभवों का एक मानसिक हेरफेर है।

परिभाषाओं में विभिन्नताओं होने के बावजूद सभी परिभाषाऐं एक सामान्य विशेषता पर सहमत है कि व्यवहार सामाजिक तत्वों के प्रति प्रतिक्रिया करने को अनुकुल बनाने का अधिकारिक रूप है। जो स्थितात्मक तथा इसकी प्रवृतात्मक विभिन्नताओं के साथ पारस्परिक क्रिया करता है। मार्गदर्शन करता है। व्यक्ति के प्रत्यक्ष व्यवहार को निर्देशित करता है। व्यावसायिक तनाव वास्तव में एक जटिल कष्ट साध्य एवं अतिरिक्त से प्रत्यय है। तथा स्पष्ट और विस्तृत स्वीकार्य परिभाषा का अभाव भी है। व्यावसायिक तनाव मापन की खोज में डॉ. श्रीवास्तव एवं डॉ. सिंह ने कहा कि व्यावसायिक तनाव कार्य परिस्थितियों के विभिन्न पक्षों के प्रति एक भावना या प्रभावी प्रतिक्रिया होती है।

1.6 शोध के उद्देश्य :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्दे"य निम्नलिखित हैं –

1. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत उच्च, सामान्य तथा निम्न शिक्षण प्रभावशीलता वाले ग्रामीण अध्यापकों के सोचशैली की तुलना करना
2. उच्च एवं सामान्य शिक्षण प्रभावाशीलता वाले माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत ग्रामीण अध्यापकों के सोचशैली प्राप्तांकों की तुलना करना
3. उच्च एवं निम्न शिक्षण प्रभावाशीलता वाले माध्यमिक विद्यालयों में कायरत ग्रामीण अध्यापकों के सोचशैली प्राप्तांकों की तुलना करना
4. सामान्य एवं निम्न शिक्षण प्रभावाशीलता वाले माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत ग्रामीण अध्यापकों के सोचशैली प्राप्तांकों की तुलना करना

शोध की परिकल्पनाएँ :–

प्रस्तुत अध्यापन की परिकल्पनायें निम्नलिखित हैं –

- माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत उच्च, सामान्य तथा निम्न शिक्षण प्रभावशीलता वाले ग्रामीण अध्यापकों के सोचशैली में सार्थक अन्तर नहीं होता।
- उच्च एवं सामान्य शिक्षण प्रभावाशीलता वाले माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत ग्रामीण अध्यापकों के सोचशैली में सार्थक अन्तर नहीं होता।
- उच्च एवं निम्न शिक्षण प्रभावाशीलता वाले माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत ग्रामीण अध्यापकों के सोचशैली में सार्थक अन्तर नहीं होता।
- सामान्य एवं निम्न शिक्षण प्रभावाशीलता वाले माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत ग्रामीण अध्यापकों के सोचशैली में सार्थक अन्तर नहीं होता।

शोध की परिसीमायें :–

प्रस्तुत शोध की निम्न सीमायें हैं –

- प्रदत्त संकलन के लिए कोरबा जिले में अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं का चयन किया गया है।
- अनुसंधान कार्य के लिए केवल माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों एवं अध्यापिकाओ का चयन किया गया है। जिनकी अनुमानित आयु 21 वर्ष से 52 वर्ष के बीच में है।
- न्यादर्श के रूप में केवल 150 अध्यापकों एवं 150 अध्यापिकाओं, कुल (300) का अध्ययन किया गया है। जिसे शोधकर्ता ने एक पर्याप्त एवं प्रतिनिधित्व न्यादर्श माना है।

शोध विधि एवं प्रारूप

इस आधार पर शोधकर्ता ने वर्तमान अध्ययन में सामान्य सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया हैं। सर्वेक्षण ने वर्तमान अध्ययन में सामान्य सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया हैं। सर्वेक्षण को सामाजिक शोध का मुख्य अंग माना जाता है। अन्वेषण में उन सभी सोपानों और विशेषताओं का अनुसरण किया गया है, जो शोध नियमित सर्वेक्षण विधि के लिए अत्यंत आवश्यक है।

जनसंख्या एवं न्यादर्श :

सर्वप्रथम अध्ययन के लिए जनसंख्या को निश्चित किया जाता है। जनसंख्या से हमारा तात्पर्य उस समूह से है जिस पर हमारा निष्कर्ष लागू एवं आधारित होगा। इस तथ्यों के ऊपर भी अगर किसी समूह से असावधानी पूर्वक नमूने एकत्रित किये जायें तो भी शोधकर्ता बतायेगा कि उसकी उपलब्धियाँ समूह विशेष पर लागू होती हैं। किसी दूसरे पर नहीं। जनसंख्या के बारे में निर्णय शोधकर्ता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। समय एवं साधन शोधकर्ता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। अन्वेषक कुल जनसंख्या पर शोध नहीं कर सकता, इसलिए एक प्रतिनिधि एवं व्यावहारिक नमूना सम्पूर्ण जनसंख्या के तैयार कर लिया जाता हैं। प्रस्तुत शोधकार्य में

शोधकर्ता ने माध्यमिक शिक्षा मण्डल से सम्बद्ध सभी सामाजिक विद्यालयों सरकारी और गैर सरकारी में अध्यापन करने वाले महिला व पुरूष अध्यापकों को सम्मिलित किया है। धन एवं समय से बचने के लिए इस अध्ययन को कोरबा जिले की भौगोलिक सीमाओं में रखा गया है।

कोरबा शैक्षणिक जिले में 1975 विद्यालय है। जिसमें प्राथमिक, माध्यमिक, उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय है, शासकीय और अशासकीय शहरी ग्रामीण है। जिसमें कुल शिक्षक 6753 है तथा पुरूष 3987 महिला 2766 है तथा इस शोध में उच्चतर/उच्च माध्यमिक शिक्षकों को लिया गया है, जिसकी कुल जनसंख्या 2468 है तथा इसमें पुरूष 2481 एवं महिला 987 है। जिनमें से यादृच्छिक विधि द्वारा कुल 300 शिक्षकों को लिया गया है।

न्यादर्श का वितरण :

सम्पूर्ण न्यादर्श (300) शहरी क्षेत्र के माध्यमिक अध्यापकों (पुरूष एवं महिला) का विवरण : प्रस्तुत अध्ययन के लिए कुल 150 पुरूष एवं महिला (75 एवं 75) अध्यापकों का कोरबा जिले के शहरी क्षेत्र में संचालित सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों से चयन किया गया है।

शोध उपकरण

(1) सोचशैली परीक्षा पत्रक : स्टर्नबर्ग और वेगनर (1991) द्वारा निर्मित
(2) शिक्षण प्रभावशीलता मापनी : डॉ. श्रीमती कुलसम द्वारा निर्मित

सांख्यिकीय प्रविधियाँ :

शोध उपकरणों के प्रशासन से प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण हेतु निम्नलिखित सांख्यिकी प्रविधियाँ प्रयोग की गई।

मध्यमान :

f-test :

f का मान ज्ञात करने के लिए तीनों समूहों के तुलनीय चर प्राप्तांकों से निम्नलिखित मूल आंकड़े प्राप्त किये गये।

1. C.T. संशोधन पद
2. T.S.S. संशोधन पद
3. S.S.B. समूहों के मध्य वर्गों का योग
4. S.S.W. समूहों के वर्गों का योग

माध्यमिक विद्यालयों में कायरत उच्च, सामान्य तथा निम्न शिक्षण प्रभावशीलता वाले ग्रामीण अध्यापकों के सोचशैली की तुलना करना

मूल आँकड़े –
संशोधन पद (C.T.) – 100052.51
वर्गों का सम्पूर्ण योग (T.S.S.) – 8439.49
मध्यमान वर्गों का योग (S.S.B.) – 2827.07
समूह के अन्तर्गत वर्गों का योग (S.S.W.) – 5612.43

सारिणी संख्या – 1

चारिता स्त्रोत	स्वतन्त्रांश	वर्गों का योग SS	वर्गों का माध्य MS	F मूल्य	सार्थकता स्तर
समूहों के माध्य	2	2827.07	1413.53	37.02	**
समूहों में	147	5612.43	38.18		

**- 0.01 स्तर पर सार्थक

अर्थापन :– सारिणी संख्या 1 में माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत उच्च, सामान्य तथा निम्न शिक्षण प्रभावशीलता वाले ग्रामीण शिक्षकों के सोचशैली स्तर की तुलना F मान के रूप में की गई। सारिणी से स्पष्ट है कि माध्यमिक विद्यालयों के उच्च, सामान्य तथा निम्न शिक्षण प्रभावशीलता वाल शिक्षकों के सोचशैली में सार्थक अन्तर होता है। तीनों समूहों के लिए प्राप्त F मान 37.02 है जो F सारिणी में दिये गये (2, 147) स्वतंत्रांश के लिए आवश्यक न्यूनतम सार्थक मान से अधिक है। स्वतंत्रांश (2, 147) के लिए .01 स्तर पर न्यूनतम सार्थक मान 4.75 होना आवश्यक है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत उच्च, सामान्य तथा निम्न शिक्षण प्रभावशीलता वाले ग्रामीण शिक्षकों के सोचशैली में सार्थक अन्तर होता है। अधिक स्पष्टता के लिए अलग–अलग टी–परीक्षण किये गये। टी–परीक्षण परिणामों को अग्रिम सारिणी में दर्शाया गया है।

उच्च एवं सामान्य शिक्षण प्रभावाशीलता वाले माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत ग्रामीण अध्यापकों के सोचशैली प्राप्तांकों की तुलना करना

सारिणी संख्या – 2

क्रम सं0	समूह का नाम	संख्या N	मध्यमान का स्तर प्राप्तांक	मानक विचलन	t-मान	सार्थकता स्तर
1.	उच्च शिक्षण प्रभावशीलता समूह	19	18.16	5.53	5.02	**
2.	सामान्य शिक्षण प्रभावशीलता समूह	105	25.23	6.28		

**- 0.01 स्तर पर सार्थक

अर्थापन :– सारिणी संख्या 2 में उच्च एवं सामान्य शिक्षण प्रभावशीलता वाले माध्यमिक ग्रामीण शिक्षकों के सोचशैली प्राप्तांकों की तुलना टी–मान के रूप में प्रदर्शित की गयी है। प्राप्त टी–मान 5.02 है, जो 122 स्वतंत्रांश के लिए सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक है। मानक टी–सारिणी के अनुसार 122 स्वतन्त्रांश के लिए 0.01 स्तर पर न्यूनतम टी–मूल्य 2.62 होना आवश्यक है। प्राप्त टी–मान, मानक टी–मूल्य से अधिक है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि उच्च एवं सामान्य शिक्षण प्रभावशीलता समूहों के ग्रामीण शिक्षकों के सोचशैली प्राप्तांकों के सार्थक अन्तर होता है। इसका अर्थ यह हुआ कि माध्यमिक ग्रामीण शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता उनके सोचशैली प्राप्तांकों को प्रभावित करती है। सारिणी से स्पष्ट है कि सामान्य शिक्षण प्रभावशीलता समूह का मध्यमान उच्च शिक्षण प्रभावशीलता समूह के मध्यमान से अधिक है, इसका तात्पर्य यह हुआ कि शिक्षण प्रभावशीलता के बढ़ने या घटने पर शिक्षक का सोचशैली भी घट या बढ़ जाता है।

उच्च एवं निम्न शिक्षण प्रभावाशीलता वाले माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत ग्रामीण अध्यापकों के सोचशैली प्राप्तांकों की तुलना करना

सारिणी संख्या – 3

क्रम सं0	समूह का नाम	संख्या N	मध्यमान का स्तर प्राप्तांक	मानक विचलन	t-मान	सार्थकता स्तर
1.	उच्च शिक्षण प्रभावशीलता समूह	19	18.18	5.53	9.18	**
2.	निम्न शिक्षण प्रभावशीलता समूह	26	33.85	5.84		

**- 0.01 स्तर पर सार्थक

अर्थापन :– सारिणी संख्या 3 में माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत उच्च एवं निम्न शिक्षण प्रभावशीलता वाले ग्रामीण अध्यापकों के सोचशैली प्राप्तांकों की तुलना टी–मान के रूप में प्रदर्शित की गयी है। प्राप्त टी–मान 9.18 है, जो सार्थक के 0.01 स्तर पर 43 स्वतंत्रांश के लिए सार्थक है। क्योंकि मानक टी–सारिणी के अनुसार 43 स्वतंत्रांश के लिए 0.01 स्तर पर सार्थक होने के लिए टी–मान 2.69 या इससे अधिक होना आवश्यक है। प्राप्त टी–मान न्यूनतम सार्थक टी–मान अधिक है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि दोनों समूहों की सोचशैली प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर होता है। ग्रामीण अध्यापकों की शिक्षण गुणवत्ता उनके सोचशैली को प्रभावित करती है। चूंकि निम्न प्रभावशीलता समूह का सोचशैली प्राप्तांक मध्यमान उच्च शिक्षण प्रभावशीलता समूह के मध्यमानों से अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि शिक्षण प्रभावशीलता के बढ़ने तथा घटने से ग्रामीण अध्यापक का सोचशैली भी घट तथा बढ़ जाता है।

सामान्य एवं निम्न शिक्षण प्रभावाशीलता वाले माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत ग्रामीण अध्यापकों के सोचशैली प्राप्तांकों की तुलना करना

सारिणी संख्या – 4

क्रम सं0	समूह का नाम	संख्या N	मध्यमान का स्तर प्राप्तांक	मानक विचलन	t-मान	सार्थकता स्तर
1.	सामान्य शिक्षण प्रभावशीलता समूह	105	25.23	6.28	6.63	**
2.	निम्न शिक्षण प्रभावशीलता समूह	26	33.85	5.84		

**- 0.01 स्तर पर सार्थक

अर्थापन :– सारिणी संख्या 4 में सामान्य तथा निम्न शिक्षण प्रभावशीलता वाले माध्यमिक ग्रामीण शिक्षकों के सोचशैली प्राप्तांकों की तुलना टी–मान के पदों में दर्शायी गयी है। तुलना से प्राप्त टी–मान 5.16 है जो 129 स्वतन्त्रांश के लिए 0.01 स्तर पर सार्थक है। मानक टी–सारिणी के अनुसार 129 स्वतन्त्रांश के लिए न्यूनतम सार्थक टी–मान 0.01 स्तर पर टी–मान 2.62 या इससे अधिक होना चाहिए। प्राप्त टी–मान न्यूनतम सार्थक टी–मान से अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि दोनों समूहों अर्थात सामान्य तथा निम्न शिक्षण प्रभावशीलता वाले ग्रामीण शिक्षक समूहा के सोचशैली प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर है। इस आधार पर यह भी निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षण की गुणवत्ता ग्रामीण शिक्षकों के सोचशैली को प्रभावित करती है।

शोध निष्कर्ष –

आँकड़ों का विश्लेषण एवं अर्थापन नामक चतुर्थ अध्याय में अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता, सोचशैली तथा व्यावसायिक तनाव प्राप्तांकों से सम्बन्धित आँकड़ो का सांख्यिकी विश्लेषण सारणियों में पंक्ति एवं स्तम्भ में प्रदर्शित किया गया है। प्रत्येक सारिणी के नीचे उनमें दिये गये सांख्यिकी परिणामों की वयाख्या अर्थात अर्थापन

दिया गया है। इस अध्याय के सांख्यिकी परिणामों के आधार पर शोध परिकल्पनाओं की वैधता का परीक्षण किया गया है। परिकल्पनाओं की वैधता के आधार पर शोध परिणामों को प्रज्ञत किया गया।

उच्च, सामान्य एवं निम्न शिक्षण प्रभावशीलता वाले ग्रामीण विद्यालयों के शिक्षकों के साचशैली प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर नहीं होता। प्राप्त F—मान 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत हुई।

उच्च एवं सामान्य शिक्षण प्रभावशीलता वाले ग्रामीण शिक्षकों के सोचशैली प्राप्तांकों ने सार्थक अन्तर नहीं होता। प्राप्त T—मान 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत हुई।

सामान्य एवं निम्न शिक्षण प्रभावशीलता वाले ग्रामीण शिक्षकों के सोचशैली प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर नहीं होता। प्राप्त T—मान 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत हुई।

उच्च एवं निम्न शिक्षण प्रभावशीलता वाले ग्रामीण शिक्षकों के सोचशैली प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर नहीं होता। प्राप्त T—मान 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत हुई।

उपसंहार :—

उच्च, सामान्य एवं निम्न शिक्षण प्रभावशीलता वाले अध्यापकों के सोचशैली मे सार्थक अन्तर होता है। शिक्षण प्रभावशीलता का स्तर बढ़ने से सोचशैली कम हो जाता है। इस आधार पर यह भी निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षण की गुणवत्ता ग्रामीण शिक्षकों के सोचशैली को प्रभावित करती है।

संदर्भ ग्रंथ :—

- भटनागर, सुरेश—कोठारी एजूकेशन कमीशन, पृ.- 157, 180, 195,
- भार्गव डॉ. महेश—'आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन आगरा शैक्षिक प्रकाशन 4/230, कचहरी घाट, पृ.- 123, 142, 174, 176
- गैरेट हेनरी ई. मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी, अंग्रेजी बम्बई – अरूण के मेहता एट वकील एण्ड संस लिमिटेड, पृ.- 155, 175, 179
- गैरेट हेनरी ई. शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग, लुधियाना कल्याणी पब्लिशर्स, पृ.- 15, 16, 19, 26,
- हुसैन, एम.क्यू. निम्न तथा उच्च सोच"ौली स्तर का शिक्षण कार्य पर प्रभाव एक अध्ययन अप्रकाशित शोध अध्ययन अलीगढ़—मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़। पृ.- 190, 193, 198
- गुप्ता, प्रतिभा, , बुद्धिमत्ता, सृजनात्मकता, सामाजिक आर्थिक प्रवेश परीक्षा में सफलता के मध्य संबंध पर एक अध्ययन, अप्रकाशित शोध अध्ययन, चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ। पृ.- 189, 200, 205
- कुरैशी और भार्गव लक्ष्य, व्यवहार, अनुशासन तथा सहन शक्ति का सोच"ौलीस्तर से संबंध एक अध्ययन, अप्रकाशित शोध अध्ययन, रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली। पृ.- 154, 203, 208, 212
- अग्रवाल, अर्चना सामान्य तथा अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि, व्यवसायिक सोच"ौली तथा सामाजिक आर्थिक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन, अप्रकाशित शोध अध्ययन, चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ। पृ.- 215, 219, 223

डॉ. संदीप उपाध्याय
असिस्टेण्ट प्रोफेसर, कोणार्क एजूकेशन कॉलेज, जांजगीर—चाँपा (छ.ग.)